B.A Part-2 Psy. Paper-3 Group-A (Research Methodology) Study material during lockdown period by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Psy. Deptt. Vaishali Mahila College, Hajipur.) Date: 14.05.2020

साक्षात्कार विधि के गुण एवं दोष

साक्षात्कार विधि के गुण

1. **विषम घटनाओं का अध्ययन-** साक्षात्कार विधि के उपयोग से विषम घटनाओं के स्वरूप को संरचित करने में विशेष सुविधा रहती है तथा इससे उसके संयुक्त रूप तथा उनके विभिन्न अंगों के संरचित रूपों का भी सरलता पूर्वक अध्ययन किया जा सकता है।
2. **गहन अध्ययन-** साक्षात्कार के द्वारा संबंधित घटना का केवल अवलोकन ही नहीं किया जाता है बल्कि इसके द्वारा एक व्यक्ति व सामाजिक स्थिति का गहन अध्ययन भी साध्य रहता है।
3. **अमूर्त तथा अदृश्य घटनाओं का अध्ययन-** अनेक घटनाओं जैसे अभिवृत्तियों, विचारों, अनुभव व मूल्य आदि का रूप प्रायः अमूर्त व अदृश्य होता है। इनके अध्ययन के लिए साक्षात्कार विधि अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक कुशल विधि है, क्योंकि इनके अध्ययन में यह विधि विशिष्ट अनुसूचियों व मापनियों के उपयोग के अतिरिक्त संबंधित घटनाओं के प्रति कोमल संवेगो व भावों का भी सूक्ष्म अध्ययन कर सकती है।
4. **अध्ययन में नम्यता-** साक्षात्कार विशेषतः अनिर्देशित व अनियंत्रित साक्षात्कार का स्वरूप पर्याप्त मात्रा में लचीला रहता है। इससे

अध्ययन के प्रक्रम को आवश्यकता अनुसार परिवर्तित किया जा सकता है और तदनुसार वांछित आंकड़े प्राप्त करने की सुविधा रहती हैं।

5. **<u>गोपनीय अनुभवों व घटनाओं की जानकारी-</u>** साक्षात्कार विधि विशेषतः गहन साक्षात्कार के द्वारा कुशल साक्षात्कारकर्ता एक व्यक्ति अथवा समूह से संबंधित गोपनीय अनुभवों व घटनाओं के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने में पर्याप्त मात्रा में सफल रहता है। अध्ययन की यह विशिष्ट सुविधा अनुसंधान के प्रायः किसी अन्य विधि के उपयोग से साध्य नहीं होती।
6. **<u>अतीत की घटनाओं का अध्ययन-</u>** अन्य विधियों की अपेक्षा साक्षात्कार विधि उत्तरदाता की अतीत की घटनाओं का सफल अध्ययन कर सकते हैं।
7. **<u>बहुपक्षीय अध्ययन-</u>** साक्षात्कार एक समस्या से संबंधित विभिन्न पहलुओं के व्यापक अध्ययन का अन्य विधियों की अपेक्षा एक सबल तथा सक्षम यंत्र है। इसके अंतर्गत साक्षात्कारकर्ता समस्या के विभिन्न पहलुओं का और साथ-साथ उत्तर दाता के हाव-भाव तथा उसके जीवन से संबंधित पर्यावरण का भी अवलोकन करता है।
8. **<u>मैत्रिक भावना की स्थापना की सुगमता-</u>** साक्षात्कार विधि के उपयोग से उत्तरदाता से मैत्रिक भावना स्थापित करने में विशेष सुविधा व सुगमता रहती है, क्योंकि साक्षात्कार प्रक्रिया एक पारस्परिक प्रेरणात्मक सामाजिक अंतःक्रिया की प्रक्रिया होती है।
9. **<u>बच्चों व अशिक्षित व्यक्तियों से भी सूचना प्राप्त-</u>** बालकों तथा और अशिक्षित व्यक्तियों के अध्ययन में भी साक्षात्कार विधि का विशेष उपयोग है, क्योंकि इससे उसके विचारों, अनुभवों व अभिवृत्तियों का अपेक्षाकृत भली-भांति अध्ययन किया जा सकता है

साक्षात्कार विधि के दोष

1. **साक्षात्कारकर्ता के पक्षपात के कारण दूषित परिणाम**- साक्षात्कारकर्ता की अभिवृत्तियों, अपेक्षाओं से आंकड़ों का स्वरूप प्रत्यक्ष प्रभावित होता है और इससे उनमें अनेक त्रुटियां घटित होती हैं। इससे प्राप्त आंकड़ों की विश्वसनीयता घटित है और वैधता भी कम होती है।
2. **उत्तरदाता में संवेगात्मक उतार-चढ़ाव से असंतुलित उत्तर-** साक्षात्कार के प्रक्रम के अंतर्गत उत्तरदाता के संवेगात्मक स्थिति प्रायः स्थिर नहीं रहती है। उसमें निरंतर उतार-चढ़ाव आते रहते हैं जिससे प्राप्त उत्तरों का स्वरूप निष्पक्ष न रहकर असंतुलित हो जाता है।
3. **साक्षात्कारकर्ता द्वारा अध्ययन की मानकीकृत स्थितियों का अभाव-** साधारणतः साक्षात्कार विधि के उपयोग में अध्ययन की स्थितियां अनियंत्रित व मानकीकृत होती रहती हैं। ऐसी स्थितियों में किया गया अध्ययन उच्च वैज्ञानिक स्तर का अध्ययन नहीं होता।
4. **सभी उत्तरदाताओं से मैत्रिक भावना की स्थापना में कठिनाइयां-** प्रत्येक व्यक्ति बातों व विचारों से खुली प्रकृति का नहीं होता है। ऐसे प्रकृति के व्यक्ति साक्षात्कारकर्ता को किसी भी प्रकार से टालने का प्रयास करते हैं। साक्षात्कारकर्ता एक विषम सामाजिक वर्ग का व्यक्ति होता है जो कि अन्य विभिन्न सामाजिक वर्गों के व्यक्तियों से भिन्न होता है अतः साक्षात्कारकर्ता को मैत्रीपूर्ण भाव बनाने में कठिनाई होती है।
5. **सन्देहपूर्ण सूचना-** साक्षात्कार विधि का प्रक्रम प्रायः कठोर व वस्तुपरक नहीं होता। अतः इससे प्राप्त सूचना का विश्वसनीयता के प्रति निरंतर संदेह बना रहता है।

6. **<u>कृत्रिम उत्तरों की अधिक संभाव्यता-</u>** यदि साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाताओं से मैत्रिक भावना स्थापित नहीं कर पाता या उत्तरदाता एक संकोची व्यक्ति है, तब प्रायः कृत्रिम व अवैध उत्तरों की प्राप्ति की ही अधिक संभावना रहती है।

7. **<u>परिशुद्ध अभिलेखन में कठिनाई-</u>** साक्षात्कार विधि के उपयोग में आंकड़ों के अभिलेखन के प्रति यदि साक्षात्कारकर्ता यांत्रिक साधनों की व्यापक सहायता नहीं ले पाता है तब इससे उनके परिशुद्ध अभिलेखन की गंभीर समस्या सामने आती है। यदि अभिलेखन स्मृति का सहारा लिया जाता है तब इससे अभिलेखन में अनेक दोष आ जाते हैं क्योंकि स्मृति का स्वरूप चयनात्मक होता है। दूसरे, इससे आंकड़ों में साक्षात्कारकर्ता के अपने व्यक्तिगत पक्षपात के आने का भी निरंतर संदेह बना रहता है।

8. **<u>स्थानीय भाषा की जानकारी में कठिनाई-</u>** साक्षात्कार द्वारा अध्ययन का आकार प्रायः व्यापक होता है इससे विभिन्न समूह व विभिन्न भाषाओं वाले उप-समूहों का भी अध्ययन सम्मिलित रहता है। अब यदि साक्षात्कारकर्ता की इन विभिन्न समूहों का स्थानीय भाषाओं की अच्छी जानकारी नहीं होती है तब इससे वैद्य आंकड़े के संकलन में स्वाभाविकतः कठिनाई प्रस्तुत होती है।

9. **<u>प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता की आवश्यकता -</u>** साक्षात्कार एक अति विकसित कला है। इसके सफल व कुशल संचालन के लिए उच्च स्तर के प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ताओं की परम आवश्यकता होती है, क्योंकि साधारण साक्षात्कारकर्ता इस महत्वपूर्ण कार्य को प्रायः कुशल रूप से संपन्न नहीं कर पाते हैं।

किसी भी् method के अपने विशेष गुण और अवगुण होते हैं, अध्ययनकर्ता method का चुनाव इनके गुण, अवगुणों या सीमाओं आदि को ध्यान में रखकर ही करते हैं।